IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित साहित्य

Sanjogita Kumari

Department of Hindi, University of Jammu

सार

दलित साहित्य दलितों का साहित्य है। दलित एक सांस्कृतिक मूल वाला शब्द है जो उन लोगों को संदर्भित करता है जो उत्पीड़ित या टुकड़ों में बढ़ गए हैं। यह शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जो हिंदू जाति व्यवस्था से बाहर आते हैं, अछूत के रूप में भारत दुनिया के सबसे तेजी से बदलते देशों में से एक है फिर भी यह अपनी कठोर जाती व्यवस्था के लिए कुख्यात है। यह पत्र दमन के इतिहास दलितों की स्थिति और उनकी सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों और दृष्टिकोण के माध्यम से जनता के सामने चित्रित करने का प्रयास करता है। इसमें दलितों के बीच उत्पन्न विभिन्न, उपेक्षाओं, आचरणों धार्मिक एवं सामाजिक प्रतिबंधों समानताओं इत्यादि को विभिन्न टीका टिप्पणी एवं आलोक के साथ प्रस्तुत करता है। यह बताता है कि दलित समुदाय ने समानता और स्वतंत्रता के लिए कैसे संघर्ष किया।

संकेत शब्द :

संदर्भित – वर्णित प्रसंग, उत्पीड़ित– सताया हुआ, कुख्यात बदनाम, उपेक्षाओं नजरअंदाज, दमन– बलपूर्वक शांत

भूमिका

हिंदी में दलित विमर्श का प्रारंभ 80 के दशक में माना जाता है। इसने लगभग 30–35 वर्ष में 1 ठोस यात्रा तय की है। हिंदी में बहुतेरे साहित्यिक आंदोलन हुए गए लेकिन संत साहित्य के बाद केवल यही ऐसा आंदोलन है जिसने पूरे साहित्य को बदल कर रख दिया। हम प्रगतिशील आंदोलन को भी नहीं भूल सकते और ना ही उनके योगदान को भूल सकते हैं और ना ही प्रेमचंद निराला और नागार्जुन जैसे रचनाकारों के योगदान को अनदेखा कर सकते हैं परंतु दलित साहित्य की शुरुआत इनके युग से नहीं कही जा सकती इनको प्रवर्तक कहने का अर्थ होगा कि हीरा डोम और स्वामी अकृतानंद को अनदेखा करना। सर्वप्रथम इनको रखा जाएगा फिर बाद में औरों को हर युग में साहित्य की जमीन बदली और मूल्यांकन के औजार भी बदले हैं लेकिन दलित साहित्य जिस बदलाव की आकांक्षा को लेकर आगे बढ़ रहा है वहीं सबसे आगे है। दलित साहित्य पथ, सम्मान, आनंद और स्वयं के कल्याण के लिए नहीं है। यह एक संघर्ष है जो सम्मान अर्थात बराबरी का हक दिलाने के लिए लड़ा जा रहा है। यह साहित्य समाज का साहित्य है जो अभी भी दर्द से कर रहा रहा है वह दर्द जो उसने अपने ही समाज में रहने वाले उच्च वर्ग की जाति से मिल रहा है. जो दलित को इंसान नहीं समझते उनको ऐसी दृष्टि से देखते

हैं जैसे वह किसी अन्य ग्रह से आए हो। उन्हें अकूत समझा गया आज के युग में भी उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। खुद को ऊंचा और उन्हें छोटा समझा जाता है। यदि उच्च जाति वालों को छोटी जाति वाले व्यक्तियों से इतना परहेज है तो वह उस डॉक्टर, शिक्षक से पूछ लिया करें कि तुम कौन सी जाति के हो यदि उच्च जाति के हो तभी हमारा इलाज करना और बच्चों को बढ़ाना बहुत बुरा लगता है जब छोटी जाति का होने के कारण मंदिर में प्रवेश पाने से वंचित होना पड़ता है। दलितों के लिए आने जाने वाले रास्तों को भी अलग कर दिया जाता है। उनके कुए अलग कर दिए जाते हैं। शुरू से ही उन पर अत्याचार होते आए है परंतु उनका विरोध कोई नहीं कर पाया इसलिए कुछ रचनाकारों ने उनके खिलाफ आवाज उठाई और यह एक संघर्ष के रूप में बदल गया स्नेही दलित साहित्य को जन्म दिया वैसे दलित साहित्य की शुरुआत मराठी साहित्य से हुई। वैसे दलित साहित्य का अद्भुत पाली की जातक कथाओं और बुद्ध के सब सत्र सुखी होन्तु से मानी जानी चाहिए। हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के उद्भव और विकास के विषय में डॉक्टर नरसिंह दास स्वर्णकार लिखते हैं हिंदी साहित्य में दलित साहित्य का उद्भव सितंबर 1914 ईस्वी की सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हीरा होम की कविता अछूत की शिकायत से दलित लेखन की शुरुआत मानी जाती है। दलित साहित्य के प्रवर्तकों में वानखेड़े जी आते हैं जिन्होंने लिखा था दलित लेखकों द्वारा दलितों के विषय में लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है। उनका मानना है कि गैर दलित साहित्यकार दलित विमर्श को तोड़ मरोड़ कर पेश कर रहे हैं। दलित साहित्यकारों की दृष्टि में दलित विमर्श का वास्तविक अर्थ गैर दलित साहित्यकारों द्वारा दलित समाज के लोगों के प्रति सुख दर्द के प्रति सहानुभूति दिखाना या ज्यादा से ज्यादा उत्पीड़न शोषण की कहस्थियों की जानकारी देना है। देखा जाए तो कबीर दास, रैदास, वाल्मीकि भी दलित है लेकिन उनका साहित्य दलित साहित्य नहीं है। आधुनिक काल में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने दलितों को सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि अधिकारों हेतु अनेक आंदोलन किए। वह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदू धर्म की आलोचना की और कहा कि समाज में जिस असमानता और छुआछूत का बोलबाला है वह हिंदू धर्म शास्त्र के कारण है। इसके लिए उन्होंने वर्ण व्यवस्था को दोषी माना है। उन्होंने जीवनभर परमात्मा, अवतारवाद, वर्ण व्यवस्था जातिवाद का विरोध किया। वही दलित चेतना के सबसे बड़े संवाहक, प्रेरणा और ऊर्जा के स्त्रोत हैं। उन्होंने भारतीय समाज में समानता लाने हेतु संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने अलगाव को स्पष्ट करने के लिए सभी दलित चिंतकों ने दलित शब्द को परिभाषित करने का प्रयास किया है क्योंकि दलित शब्द को समझना भी जरूरी है। कंवल भारती ने दलित साहित्य के बारे में लिखा है कि दलित साहित्य वह साहित्य है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा का वर्णन किया है, अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस पथार्थ को भोगा है। दलित साहित्य उनकी उसी अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए कला नहीं बल्कि जीवन और जिजिविषा का साहित्य है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहना है दलित साहित्य जन साहित्य है यानी मास लिटरेचर है लिटरेचर ऑफ एक्शन भी है। जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामन्ती मानसिकता आक्रोश जनित संघर्ष है। इसी संघर्ष और विद्रोह से उपजा है दलित साहित्य।

म. भि. चिटणिस ने कहा है कि परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोह करने वाला साहित्य हिंदू संस्कृति और पौराणिकता से अलग साहित्य ही दलितों द्वारा दलितों के लिए लिखा साहित्य दलित साहित्य है। दलित साहित्य कठोर अनुभवों पर आधारित है। इस साहित्य में विद्रोह की भावना ही प्रमुख है। दलित साहित्य में सामाजिक दर्द है जातिवाद की पीड़ा है शोषण और उत्पीड़न है तो वही जाती उत्पीड़न और शोषण के कारणों की तलाश भी है। आज दलित साहित्य मात्र घटना ही नहीं है बल्कि यह इतिहास का संपूर्ण वैज्ञानिक और विराट सामाजिक पुनर्मूल्यांकन करना चाहता है। दलित साहित्य में दलित अधिकार अपने पर हुए सामाजिक धार्मिक और आर्थिक अत्याचारों को समाज के सामने रखता ही नहीं बल्कि वह उनके मूल्य कड़वेपन में ही परोसता है। जिन्होंने उसे अपमानित किया तिरस्कृत किया और अपमान झेलने पर मजबूर किया इसलिए हम कह सकते हैं कि दलितों के दुख परेशानियां, गुलामी, अत्याचारों और उत्पीड़न के लिए संघर्ष को चित्रित करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। दलित साहित्य को पूर्ण रूप से वही लिख सकता है जो खुद दलित है अपनी अभिव्यक्ति वह खुद पूर्ण रूप से कर सकता है क्योंकि उसने खुद भोगा है वह दुख, दर्द वह अछूत कहे जाने की पीड़ा को स्वयं सहन किया है जिस मानसिक स्थिति से वह गुजरा है वह वही समझ और लिख सकता है। वही सच्चे अर्थों में दलित साहित्य का जाएगा। दलित साहित्यकारों के साहित्य की तुलना हम गैर दलित साहित्यकारों से नहीं कर सकते के साहित्यकारों के साहित्य में वह बात नजर नहीं आती वह अनुभूतियां नजर नहीं आती जो दलित साहित्यकारों के साहित्य में नजर आती है। प्रेमचंद जी की कहानियों ने हमें दलित चेतना नजर आती है उनके काव्य में दलित जीवन की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उन्होंने भी अपनी कहानी में भारतीय समाज व्यवस्था में अत्यंत दयनीय जीवन जीते दलितों वह शूद्रों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है और उनकी या तनाव एवं जीवन संघर्ष का संपूर्णता से अंकन किया है। विशेषकर उनकी कहानियां ठाकुर का कुआं, सदगति, दूध का दाम, मुक्ति मार्ग मैं दलित चेतना दिखाई देती है। परंतु जो आत्मीयता जूठन,

मुर्दहिया, अछूत की शिकायत में नजर आती है वह इनमें नहीं आती क्योंकि जो खुद दलित नहीं है वह दलितों के ऊपर कैसे लिख सकता है। क्योंकि साहित्य का अर्थ ही दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य है।

दलित साहित्य में विशेष स्थान रखने वाली कृति है जूठन यह आत्मकथा है जो ओमप्रकाश वाल्मीकि के द्वारा लिखी गई है। यह एक दलित लेखक है। र इनकी यह विशिष्ट आत्मकथा है। स्वयं की निजी और कड़वे अनुभवों के माध्यम से अपनी कृति में वर्ण वादी समाज की स्थिति को सामने रखा है। यह सिर्फ आत्मकथा ही नहीं बल्कि दलित समाज का भोगा गया सच है किसी प्रकार से दलितों को अछूत कहकर मारा जाता है उन्हें पढ़ने के अधिकार से भी वंचित रखा जाता है और अगर प्रवेश मिल भी जाए विद्यालय में तो किस तरह से उनके साथ व्यवहार किया जाता है यह सब इसमें मिलता है। प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश के समय बालक ओमप्रकाश वाल्मीकि को तरह-तरह से परेशान किया जाता है प्रवेश परीक्षा अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। 3 दिन तक लगातार झाड़ू लगवाया जाता है किंतु कक्षा में बैठने का मौका 1 दिन भी नहीं मिलता। हेड मास्टर यही कहता रहता है चूहडा हो के पढ़ने चला है. यह जातीय दंभ और अमानवीयता को दर्शाता है। आर्थिक तंगी तो होती ही है और ऊपर से जाति के बंधन भी खड़े थे। ओम प्रकाश जी को एहसास हो गया था की गरीबी से आजादी मिल सकती है परंतु जाति से पार पाना आसान नहीं पिछड़ा वर्ग आंतरिक जातिवाद में झगड़ा हुआ है जिसका कटु अनुभव ओमप्रकाश वाल्मीकि को है इसलिए उन्हें यह आत्मकथा लिख कर अपने अनुभव रखते। 'अपना गांव' नामक कृति में मोहनदास नैमिशराय ने दलित मुक्ति संघर्ष के आंदोलन की अतिरिक्त वेदना से पाठकों को अवगत कराया है। यह उनकी महत्वपूर्ण कहानी है। यह दलितों के स्वाभिमान और आत्मविश्वास जगाने की भाव भूमि तैयार करती है।

"सुनो ब्राह्मण" कविता में मलखान सिंह ने दलित व्यवस्था, सामंती व्यवस्था और ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर प्रहार किया है। साथ ही उन तमाम मिथकों, बांबे और प्रतीकों को भी चेतावनी दी है जो साहित्य में जड़ जमाए बैठे हैं। "दोहरा अभिशाप भी एक आत्मकथा है जो कौशल्या वैसन्त्री द्वारा लिखी गई है। यह पहली महिला आत्मकथा है। कौशल्या वैसन्नई ने अपने जीवन की एक एक परतो को पाठकों के सामने बड़े साहस के साथ प्रस्तुत किया है। लेखिका ने दलित समाज की अच्छाई बुराई सभी का विवरण अपनी आत्मकथा में दिया है। स्वर्ण में विधवा विवाह को मान्यता नहीं दी जाती है। वही दलित समाज में विधवा अगर दोबारा शादी करे तो रोक-टोक नहीं है लेकिन विधवा अलग है और उससे दीवाना कहकर पाट' कहा जाता है। समाज में औरतों की क्या दशा है यह सभी जानते हैं। समाज में स्त्री का दर्जा मात्र एक दासी का ही है चाहे वह दलित हो या फिर ऊंची जाति की फिर भी समाज में दलित स्त्रियों का तिहरा शोषण होता है। एक तो दलित महिलाएं दिन-रात मजदूरी करती हैं और उनका शोषण भी किया जाता है दलित होने के कारण भी पोयम पुरुषों के साथ साथ पति के शोषण का भी शिकार होना पड़ता है। दलित स्त्री आत्म कथाओं में अभिव्यक्ति, संदर्भ, परिवेश समस्या और संघर्ष का स्वरूप मुख्य रूप से उजागर हुआ है। बाल्मीकि जी की कहानी पच्चीस चौका डेढ़ सौ में सामाजिक परिवेश गत बढ़ाएं शोषण के विविध अपमान को तर्कसंगत रूप से अभिव्यक्त किया गया है। ग्रामीण जीवन में अशिक्षित दलित का जो शोषण होता रहा है और किसी भी देश और समाज के लिए गहरी शर्मिंदगी का सबब होना चाहिए।

'पच्चीस चौका डेढ़ सौ कहानी ने इसी तरह के शोषण को जब पाठक पड़ता है तो वह समाज में व्याप्त शोषण की संस्कृति के प्रति गहरी निराशा से भर उठता है। बयाज पर दिए जाने वाले हिसाब में किस तरह एक संपन्न व्यक्ति एक गरीब दलित को ठगता है वह पाठक की संवेदना में झकझोर और कर रख देता है।

'मुर्दहिय' पूर्वी उत्तर प्रदेश की ब्राह्मणवादी समिति मानसिकता के उत्पीड़न की अभिव्यक्ति है जिसमें ग्रामीण अंचल में शिक्षा के लिए जूझते एक दलित की मार्मिक अभिव्यक्ति है। जहां सामाजिक धार्मिक आर्थिक विसंगतियां कदम कदम पर दलित का रास्ता रोककर खड़ी हो जाती है। लेकिन एक दलित संघर्ष करते हुए इन तमाम विसंगतियों से अपने आत्मविश्वास के बल पर बाहर आता है। दलित साहित्य को केंद्र में रखकर बहुत ही रचनाएं रची गई जिन्होंने अनेक जीवन के ददों को सामने लाया या रचनाएं उनके जीवन के केंद्र में रखकर रची गई और उनके जीवन की सच्चाई को बेहद यथार्थवादी तरीके से सामने रखी यह सारी रचनाएं उनमें से एक है जो हमारे दलित साहित्य में विशेष स्थान रखती है। हिंदी साहित्य के दलित लेखकों की रचनाएं चेतना से परिपूर्ण और दलित अस्मिता के लिए संघर्ष को दर्शाती है। साधारण आदमी की व्यवस्था, विवशता और घुटन भी जिंदगी के अंधेरे को चित्रित करते हैं। डॉक्टर कालीचरण स्नेही अपनी कविता 'कौन बड़ा है' में यह प्रश्न पूछते हैं कि आजादी के बाद दलितों को बहुत कुछ मिला लेकिन जो सामाजिक हैसियत उन्हें चाहिए वह अभी भी क्यों शेष है। इसीलिए कालीचरण स्नेही कहते हैं "तुमने हमारे खातिर दिल्ली का आलीशान राष्ट्रपति भवन तो खाली कर दिया मगर अभी खाली नहीं

किया"। गांव का छोटा सा जीण शिण दलित साहित्य आज जिस मुकाम पर पहुंचा है उसमें पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका मुख्य रही है जैसे 'भीम अंबेडकर मिशन धर्म दर्पण, युद्रत आम आदमी, हंस, राजेंद्र यादव, दलित साहित्य वार्षिक, जय प्रकाश क़दम आदि।

निष्कर्ष

हमारे समाज में जो जाति एवं वर्ण व्यवस्था है उसी के फल स्वरूप दलित साहित्य है यदि जाति व्यवस्था ना हो तो दलित साहित्य भी ना हो। साहित्य मनुष्य समाज में परिवर्तन का माध्यम होता है। साहित्य से सभी दिन ही दलित सभी को वाणी मिलती है। दलित साहित्य भी दलितों की वाणी है जो समाज तक पहुंचने का माध्यम बन उनकी पीड़ा को समाज तक पहुंचाया है। लेखकों ने दलित साहित्य को समृद्ध करने का कार्य किया है अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को दिशा प्रदान करने का कार्य किया है यह रचनाएं दलित समाज का आईना है जिसमें सामान्य जीवन व्यवहार के साथ धार्मिक, संस्कृति मूल्यों को भी देखा जा सकता है।

संदर्भ :

१ हिंदी साहित्य चिंतन डॉ ललित कौशल

२ धर्म शास्त्र का इतिहास

३ दलित विमर्श डॉक्टर नरसिंह दास वर्णकार

४ दलित साहित्य का समाजशास्त्र डॉक्टर हरि नारायण ठाकुर

५ दलित विमर्श ओमप्रकाश वाल्मीकि

६ दोहरा अभिशाप कौशल्या बैसन्त्री